नेपाल-काठमाण्डू। भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात कर ईश्वरीय सेवाओं की जानकारी देने के पश्चात् उपस्थित हैं नेपाल स्थित ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्रों की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

सहयोग देने वाले व्यक्ति का हम सम्मान करें

जिसके मन में सहयोगियों के प्रति एहसान नहीं होगा, वह न तो स्वयं सहयोगी बन सकता है, न योगी क्योंकि वह प्रीति की रीति को निभाना ही नहीं जानता। बुरों के साथ भलाई करने की बात तो दूर रही, जिन्होंने उसके साथ भलाई की, वह तो उनके साथ भी भलाई करना नहीं जानता, तब भला उसके व्यवहार में वो सज्जनता, सौष्ठव(सुन्दरता) अथवा श्रेष्ठता कैसे आ सकते हैं?

सोचने की बात है कि जब हम मुसीबतों से घिरे थे तब यदि किसी ने हमारी मुसीबत को हल्का किया, जब हम घटाटोप अन्धेरे से घिरे थे, तब किसी ने मोमबत्ती जगाकर रास्ता दिखाया था, जब हमारा मन कभी टूट चुका था तब उस घड़ी किसी ने हममें एक नया उत्साह फूंक दिया और हम अपनी समस्याओं से जूझने के लिए तैयार हो कर खड़े हो गये या अन्य किसी भी प्रकार से हमारे आड़े-दिनों में हमें सहायता दी तो क्या इसे भुलाना इन्सानियत है? ये ठीक है कि हम गुण एक परमात्मा के गाते हैं और हमारा पूर्ण कल्याण करने वाला वह एक परमपिता ही है और दूसरे सब तो असमर्थ जीव हैं। तब क्या इसका यह अर्थ है कि हम किसी द्वारा की हुई भलाई को भुला दें? जिसने हमें समय पर जैसा भी सहयोग दिया, उसका कई गुणा अधिक न सही, क्या हम उसका थोड़ा भी एहसान न मानें? क्या सहयोग देने वाले व्यक्ति का हम सम्मान न करें, उसके प्रति हमारा थोड़ा भी कृतज्ञता का भाव न हो? हमारे मन में उसके प्रति धन्यवाद का रिचक भी भाव न हो? क्या ऐसे स्वभाव को हम मानवता का चिन्ह मानेंगे? हम सभी के जीवन का अनुभव तो यही कहता है कि हमें सहायता, सहारा या सहयोग देने वाले व्यक्ति का एहसान मानना चाहिये। परन्तु देखा गया है कि ऐसे भी कुछ धृष्ट(ढिठ) और कठोर स्वभाव के लोग होते हैं जो एहसान फरामोश होते हैं। कोई उनके साथ कितनी भी भलाई कर दे, वो उसे अपना अधिकार मानते हैं और उसके प्रति शुक्रगुज़ार नहीं होते। यदि भलाई करने वाले व्यक्ति पर कभी आ बनी हो या उसके कुछ टेढ़े दिन आये हों, उसकी शक्तियाँ, साधन और स्रोत क्षीण होने लगे हों, तो वे उसको कभी पूछते तक नहीं। वे सोचते हैं कि--"यदि उसने हमसे कोई भलाई की थी तो इसमें बड़ी बात क्या है? अपने अच्छे कार्य से तो उस व्यक्ति ने अपना भाग्य बनाया है", वे कहते हैं कि- "अगर हमारे बाप ने, बड़े भाई ने, पड़ोसी ने, साथ कार्य करने वाले व्यक्ति ने, किसी सम्बन्धी ने कुछ हमें फायदा पहुँचाया भी हो तो इसमें एहसान की क्या बात है? यदि हमें किसी ने जीवन में सफलता के लिये कोई राय दी, जिस समय हमारे भाग्य की नैया डूब रही थी, उस समय हमें सम्भाल लिया, तब उसने अपना कर्त्तव्य ही तो किया....।" क्या इस प्रकार की विचारधारा वाले लोग नैतिकता एवं सद्व्यवहार की सीढ़ी पर ऊपर चढ़ सकते हैं? क्या वे योगी बन सकते हैं अथवा 'महात्मा' कोटि के हो सकते हैं?

राजयोगी ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

योगी नहीं कूटनीतिज्ञ

ऐसे लोग राजनीतिज्ञ तो हो सकते हैं, वे योगी नहीं हो सकते क्योंकि योगी जीवन के लिये दो गुणों का होना आवश्यक है। यदि कोई व्यक्ति परमात्मा के एहसानों को ही न मानें, वह सच्चे दिल से परमात्मा का शुक्रिया ही न करे तो उस श्रद्धाहीन, भावना-विहीन, हृदय-रहित व्यक्ति का योग लग ही नहीं सकता। योगी की तो ऐसी स्थिति होती है कि वो अपना सब-कुछ परमात्मा को समर्पित कर देता है; अपने पास कुछ रखता ही नहीं हैं क्योंकि वह ऐसा मानता है कि परमात्मा ने उसे विकारों की दलदल से निकाला है। उसे सत्यता की राह दिखाई है, बुराइयों का सामना करने के लिये उसमें प्रोत्साहन भरा है, उसकी निर्बल आत्मा में शक्ति का संचार किया है, उसकी काया-कल्प कर दी है, मूर्छा से उसे जगाया है, उसे डूबने से बचाया है और इसलिये वह इतना भाव-विभोर होता है, वो सोचता है कि यदि सब-कुछ परमात्मा पर न्यौछावर कर दिया जाये तो भी तिल अथवा राई मात्र है, जबकि परमात्मा के एहसान हिमालय से भी ऊँचे हैं। ऐसे जब भाव की बाढ़ उसके मन में आती है तो उसकी आँखें छलकने लगती हैं और वह उस समय परमात्मा का मिलन मना रहा होता है। एहसान मानते हुए मिलन मनाने की उस स्थिति विशेष का नाम ही तो 'योग' है। वह 'आसान योग' भी है और 'एहसान योग' भी है। हैवान भी अपने मालिक का एहसान मानता है और यदि इन्सान एहसान न माने, माफ कीजिएगा तो वह 'बे-ईमान' है। इसके अतिरिक्त, योगी को योगी बनने में जो भी कोई सहयोग देता है, उसके प्रति भी उसके मन में एहसान का एहसास होता है क्योंकि वो उसके जीवन को अच्छा बनाने के निमित्त बना। जिसके मन में सहयोगियों के प्रति एहसान नहीं होगा, वह न तो स्वयं सहयोगी बन सकता है, न योगी क्योंकि वह प्रीति की रीति को निभाना ही नहीं जानता। बुरों के साथ भलाई करने की बात तो दूर रही, जिन्होंने उसके साथ भलाई की, वह तो उनके साथ भी भलाई करना नहीं जानता, तब भला उसके व्यवहार में वो सज्जनता, सौष्ठव(सुन्दरता) अथवा श्रेष्ठता कैसे आ सकते हैं?

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो किसी छोटे-मोटे, अच्छे काम करने वाले हर व्यक्ति को हर पाँच मिनट के बाद एक शिष्टाचार के नाते कहते हैं- "आपका धन्यवाद" न जाने दिन-भर में कितनी बार, कितने लोगों को वे सभ्यता के नाते धन्यवाद कहते होंगे। इस सभ्यता के तौर पर कहे गये धन्यवाद की बात अलग है, परन्तु एहसान मानने की बात का सम्बन्ध मन की गहराई से होता है। प्रथम अर्थात् धन्यवाद का सम्बन्ध सभ्यता से और मन की गहराई से, एहसान मानने का सम्बन्ध प्रेम से किसी के द्वारा की गई भलाई के आदर भाव से, उस व्यक्ति के प्रति कृतज्ञता से तथा कभी उसके साथ भलाई करने की कसक तीव्र इच्छा से है।

शांतिवन। वुमेन वर्ल्ड रिकॉर्ड्स द्वारा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी को महिला सशक्तिकरण हेतु किये गये कार्यों के लिए 'वुमेन एम्पॉवरमेंट अवॉर्ड' से सम्मानित किया गया। वुमेन वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के राष्ट्रीय सचिव डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके ने यह सम्मान दादी को प्रदान किया। इस मौके पर ब्र.कु. लीला बहन, ओमशान्ति मीडिया के संपादक ब्र.कु. गंगाधर भाई व ब्र.कु. प्रज्ञा बहन उपस्थित रहे।

अहमदाबाद-गुज.। ऑस्ट्रेलियन क्रिकेटर्स उस्मान ख्वाजा, कैमरून ग्रीन, मैथ्यू हेडन व अन्य खिलाड़ियों को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् साथ हैं ब्र.कु. भावना बहन व ब्र.कु. डायना बहन,न्यूज़ीलैंड।

भुज-(गुज.)। महिला दिवस के अवसर पर लायंस क्लब ऑफ क्वीन भुज में कार्यक्रम को सम्बोधित करने के पश्चात् केक काटते हुए ब्र.कु. रश्मि बहन, ब्र.कु. इला बहन, क्लब की प्रेसिडेंट दमयंती बहन, सेक्रेट्री कमला बहन तथा अन्य।

बिलासपुर-राज किशोर नगर(छ.ग.)। जल-जन अभियान के तहत ब्रह्माकुमारीज़ के शिव-अनुराग भवन सेवाकेन्द्र में आयोजित कार्यक्रम में रेलवे क्षेत्र से मुख्य भण्डार सामग्री प्रबंधक ओमप्रकाश सिंह, पूर्व थाना प्रभारी इन्द्र नारायण सिंह, बीएसएनएल के पूर्व कार्यपालक अभियंता राजेन्द्र कुमार गुप्ता, पूर्व प्राचार्य शान्तनु सिंह, ब्र.कु. मंजू दीदी, मस्तूरी, कोटमीसुनार, नरियरा, बलौद, टिकरापारा आदि स्थानों से ब्रह्माकुमारी बहनों सहित रामकथा सुनने आये अनेक श्रद्धालु शामिल हुए।

सादुलपुर-राजगढ़(म.प्र.)। आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत साहित्य समिति एवं ब्रह्माकुमारीज़ के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित 'महिला सम्मान' विषयक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए ब्र.कु. चंद्रकांता दीदी, ब्र.कु. शोभा बहन, डॉ. उर्मिल जैन, श्रीमति बिमला सिंघल,से.नि. प्राचार्य, प्राचार्य सुनीता पुनियां, शिक्षाविद प्रताप कसवां, महावीर सिंघल तथा अन्य।